वेदों की खुशबू

ओ३म्

वेद सब के लिए

(धर्म मर्यादा फैलाकर लाभ दें संसार को)

VEDIC THOUGHTS

A Perfect Blend of Vedic Values And Modern Thinking

Monthly Magazine	Issue 33	Year 3	Volume 9	June 2015 Chandigarh	Page 24	मासिक पत्रिका Subscription Cost Annual - Rs. 100-see page 4

विचार

यह कर्म फल है इसे ईश्वर के अस्तित्व के साथ जोड़ना गलत है

अभी नेपाल में भूकम्प में हजारों व्यक्तियों की जाने चली गई । एक व्यक्ति जिसके 52 सदस्यों वाले संयुक्त परिवार के 40 व्यक्ति इस हादसें में मर गये उस का कहना है कि उसका विश्वास ईश्वर के उपर से उठ गया है। जिस दिन भूचाल आया उस दिन उस व्यक्ति ने अपने घर में 'सप्ताहिक पूजन' रखा हुआ था। उसका कहना है —— मैने तो भगवान को खुश करने के लिये यह सब पूजन किया पर अगर उसका बदला यह है तो मैं ऐसे भगवान पर भरोसा कैसे कर सकता हूं।

इसके विपरीत, उसके घर से कुछ किलोमिटर दूर ही एक व्यकित जिसे कुछ खरोंचे ही आइ हैं, उसका कहना है कि इश्वर की कृपा का कोई अन्त नहीं, वह उस प्रभु का बार – बार गुणगाण कर रहा था कारण वह और उस के परिवार के पांच सदस्य जो कि पांच मंजली ईमारत के सब से उपर रहते थे, उसके पूरी तरह ढहने पर भी बच गये जब कि उस ईमारत में रहने वाले दस अन्य परिवारों में कोई और नहीं बचा।

Contact:
Bhartendu Sood, Editor, Publisher & Printer # 231, Sec. 45-A, Chandigarh 160047
Tel. 0172-2662870 (M) 9217970381,
E-mail : bhartsood@yahoo.co.in

इसी तरह मुझे आज से कोई 20 साल पहले की घटना याद आती है। हमं उस समय दिल्ली में रहते थे और वृंदावन धूमने गये थे। इसकोन(ISCON) के मन्दिर में युरोप से आये महाराज, जो कि ईसाईसे हिन्दु बन गये थे, का प्रवचन हो रहा था। हमं भी सुनने के लिये बैठ गये। उन्होने अपने प्रवचन में जो मुख्य बात की वह इस प्रकार है——— मैं फ्रांस में रहता था और एक कम्पनी में पायलट लगा हुआ था। मेरा ईश्वर में कोई विश्वास नहीं था। एक बार मैं एक छोटे निजी हवाई जहाज की उड़ान लेकर जा रहा था कि हमारे हवाई जहाज दुर्घटनाग्रस्त हो गया। 11 यात्रियों में मैं ही बचा और बाकी दस दुर्घटना में मारे गयें। इस घटना ने मुझे नास्तिक से आस्तिक बना दिया। मुझे विश्वास हो गया कि कोई शक्ति है जो इस संसार को चला रही है।

मैं अपनी जगह से उठा और महाराज से बोला————इस में कोइ संदेह नही कि इस सारे ब्राहमाडं को बनाने और चलाने वाला ईश्वर है। पर आपका उस में इस लिये विश्वास पैदा हो कि उसने आपको इतनी बड़ी दुर्घटना में बचा लिया, मझे कुछ ठीक नहीं लगती। आप जरा दूसरे ढंग से भी सोचिये। दुर्घटना में जो मारे गये उनमें बहुत से ऐसे होंगे जो ईश्वर को मानते होंगे। क्या कुछ अटपटा नहीं लगता कि जो व्यक्ति तो ईश्वर में विश्वास नहीं करता था उसे तो ईश्वर ने वचा लिया और जो विश्वास करते थे उन को नहीं बचाया। कहने का अर्थ है—— ''जो तो नास्तिक हें उनको तो जीवन दान और जो आस्कित है उन की छुटटी।'' जरा सोचिये ऐसे ईश्वर को कोन मानेगा। श्रधालुओं ने अपने महाराज की बात को तर्क द्वारा कटते देखा तो मझे बिठा दिया। पर महाराज उसके बाद बोल नहीं पाये।

मेरे अनुसार जीवन की चमत्कारी घटनाओं को ईश्वर के अस्तित्व के साथ जोड़ना या ईश्वर में अपने विश्वास के साथ जोड़ना, ईश्वर को न समझना है। मेरे अनुसार जो भी हमारे जीवन में घटनायें हो रही हैं जिन में ये चमत्कारी घटनायें भी शामिल हैं, हमारे इस जन्म के या फिर पिछले जन्मो के कर्मो का फल ही होते हैं। इस में ईश्वर ने कुछ नहीं करना। कर्म फल का सिघान्त ईश्वर की न्यायकारी व्यवस्था का ही हिस्सा है। हमारे अच्छे कर्मो का फल अच्छा और बुरे कर्मो का फल बुरा होता है। तभी तो ईश्वर को न्यायकारी कहा गया है। वैदिक धर्म में कहा गयाहै कि मनुष्य को अपने किए हुए कर्मों का फल अवश्य ही भोगना पड़ता है, चाहे इस जन्म में या अगले जन्म में। बिना भोगे इससे कोई बच नहीं सकता और न कोई धर्मगुरू व मत प्रवर्तक आदि भी कर्म–फल भोग से किसी को बचा सकता है। नेपाल जैसी प्रकृतिक आपदाओं में कुछ तो बहुत मुश्किल हालात में मर गये और कुछ बच गये, यह सब कर्म–फल सिद्धान्त को ही बताता है।

इस सृष्टि की रचना ही ईश्वर के अस्तित्व का ब्यान कर रही है। इन सैंकड़ो सूर्यो, पृथ्वियों और दूसरे ग्रहों को बनाने वाली कोई शक्ति है। **मनुष्य** तो एक फूल तक नहीं बना सकता और अगर पलास्टिक या कागज का बना भी लेता है तो उस में खुशबू नहीं होती। उसके द्वारा बनाई अच्छी से अच्छी मशीन में कभी न कभी कोई खराबी आ जाती है पर उस ईश्वर की बनाई हुई वयवस्थाओं को देखें, लाखों वर्षों से वैसे ही काम कर रही हैं उन में कभी कोई खराबी नहीं आती। सब से बड़ा और सब से छोटा दिन नियम से ठीक एक साल बाद आता है। ठीक चार साल बाद ऐक वर्ष में 366 आते हैं। इस सृष्टि की रचनायें पग पग पर उस सर्वशक्तिमान ईश्वर के अस्तित्व का ब्यान कर रही है। उसे अपना विश्वास पैदा करने के लिये चमतकार करने की आवश्यकता नहीं।

जब कर्मफल का विधान है तो फल देने वाला भी अवश्य है

कुछ समुदाये कर्मफल के विधान को तो मानते हैं पर फल देने वाले की सता को नहीं मानते। इस बारे में वैदिक मान्यता अलग है। वैदिक मान्यता के अनुसार हमारे कर्मो का फल ईश्वर की न्यायव्यवस्था में ही मिलता है। यह स्वभाविक है कि आदमी अपने कर्म का फल, खासकर जब उसका कर्म बुरा है, स्वयं अपने आप भोगना नहीं चाहेगा। अतः कोई न कोई शक्ति अवश्य है जो फल देती है व यह भी अवश्य हे कि वह शक्ति न्यायकारी है, तभी उसकी सता को माना जा सकता है।

अगर और गहराई में जाएं तो यह कहना गल्त नहीं होगा कि कोई भी अपराधी अपने आप दंड का भुगतान नही चाहता। दंड तभी मिलेगा अगर कोई न्यायधीश होगा। अथार्त इस विशाल संसार में जिसमे अरबों मनुष्य व प्राणी रहते हैं, कोई ऐसी शक्ति अवश्य है जो कर्मफल के विधान को उचित फल देकर चला रही है और वह शक्ति न्यायकारी ईश्वर है, और कोई नहीं।

अगर हमारे द्वारा किये कर्मो का फल देने वाला न हो तो सारी व्यवस्था डगमगा जायेगी। हमारे शास्त्रों में इस व्यवस्था को एक सुन्दर दृष्टांत द्वारा बताया गया है——एक वृक्ष पर दो पक्षी बैठे हैं। एक पक्षी पेड़ पर लगे फलों को जिन में कुछ खटे हैं कुछ मीठे हैं खाते जा रहा है जब की दूसरा पक्षी फल नहीं खा रहा वह केवल दूसरे पक्षी को जो कि पेड़ पर लगे फलों को खा रहा है, देख रहा है। जो पक्षी पेड़ पर लगे फलों को खा रहा है वह आत्मा है जब कि दूसरा पक्षी जो खा नही रहा केवल दूसरे पक्षी को खाते हुये देख रहा है, वह परमात्मा है। आत्मा कर्म में लीन है जब की परमात्मा आत्मा के कर्म का फल देती है।

यह कर्मफल नही ंतो और क्या है?

अभी नेपाल में जहां भूकम्प आया था लगभग वहीं पिछले वर्ष एक धार्मिक मेला लगा था उस में कई लाख पशुओं को जिन में भैंसे, बकरियों, भेड़ें आदि शामिल थी धामिर्क रस्म को पूरा करने के लिये बहुत बेरहमी से काटा गया था। उन में भी वैसे ही प्राण होते हैं और वे भी हमारी तरह ही जीना चाहते हैं। न्यायकारी ईश्वर यह सब देख रहा है। और दण्ड उचित समय में अवश्य मिलता है। अच्छा हो नेपाल के लोग और हमारे बहुत सारे हिन्दु लोग इस से कुछ सबक लें।यह प्रथा जिनका हिन्दु शासत्रों में कहीं भी आज्ञा नहीं, हिन्दु धर्म पर बहुत बड़ा धब्बा है। पहले हमें खुद को सुधारना होगा दूसरे मतों और धर्म वालों को तों हमें कुछ कहने का तभी अधिकार है।

बहुत खूब है हमारी न्यायिक व्यवस्था

दिल्ली की एक अदालत ने अभी हाल में फैसला दिया कि आप पक्षियों को पिंजरें में बन्द नहीं कर सकते यह उनके स्वतन्त्र विचरने और उड़ने पर एक प्रतिबन्ध है, ऐसा करना उनके मूल अधिकारों को छीनना होगा।

हम इन मूक प्राणियों के स्वतन्त्र विचरने और उड़ने के अधिकार में बारे में तो चिन्तित हैं पर उनके जीने के अधिकार के बारे में नहीं। यदि हम उनके जीने के अधिकार के बारे में भी चिन्तित हों तो लाखों मुर्गियों, मुर्गो और दूसरे पक्षियों को रोज अपने खाने के सवाद के लिये नहीं मारेंगें।

अच्छा होता माननिय जज साहब याद रखते कि उड़ेंगे तो तब जब हम उन्हें जीने देंगे।

पत्रिका के लिये शुल्क

सालाना शुल्क 100 रूपये है, शुल्क कैसे दें

1. आप 9217970381 या 0172–2662870 पर subscribe करने की सूचना दे दें। PIN CODE अवश्य दे
2. **आप चैक या कैश निम्न बैंक मे जमा करवा सकते हैं :–**
   Vedic thoughts, Central bank of India A/C No. 3112975979 **IFC Code - CBIN0280414**
   Bhartendu soood, IDBI Bank - 0272104000055550 **IFC Code - IBKL0000272**
   Bhartendu Sood, Punjab & Sindh Bank - 02421000021195, **IFC Code - PSIB0000242**
3. आप मनीआर्डर या at par का Cheque द्वारा निम्न पते पर भेज सकते है। H. No. 231, Sector 45-A, Chandigarh 160047.
4. दो साल से अधिक का शुल्क या किसी भी तरह का दान व अनुदान न भेजें। शुल्क तभी दें अगर पत्रिका अच्छी लाभप्रद व रूचिकर लगे।

यदि आप बैंक में जमा नहीं करवा सकते तो कृपया at par का चैक भेज दे।

परिवार में प्रेम की कुंजी

मनमोहन कुमार आर्य

परिवार को सुसंगठित बनाने में सब लोगों का सुख व समृद्धि है यह तभी सम्भव है जब हम परस्पर विरोधी विचारों से बचें। अथर्ववेद का 3/30/1मन्त्र परिवार में हृदयों व मनों की एकता पर प्रकाश डालता है। यह एक प्रकार से सुखी गृहस्थ, सुखी परिवार तथा धरती को स्वर्ग बनाने का आधार है। आईये, मन्त्र का पाठ करते हैं–

ओ३म् सहृदयंसांमनस्यमविद्वेशं कृणोमि वः।

अन्या अन्यमभि हर्यतवत्सं जातांमवाघ्न्या।।

इस मन्त्र का शब्दार्थ इस प्रकार है। हे गृहवासियो ! मैं परमात्मा, तुम्हारे लिए सहृदयता अर्थात् परस्पर सहानुभूति तथा प्रेमपूर्ण हृदय का, मन में विचारों तथा संकल्पों की एकता का, तथा परस्पर बिना किसी वैर भाव के रहने का उपदेश करता हूं। एक दूसरे को वैसे ही चाहो और प्रेम करो जैसे उत्पन्न हुए बछड़े से गाय करती है। इस मन्त्र में परम पिता परमात्मा पहला उपदेश यह देते हैं कि हे गृहवासियों ! तुम एक दूसरे के साथ सहृदयता का व्यवहार करो अर्थात् परस्पर सहानुभूति और प्रेम का व्यवहार करो। दूसरे के दुःख को दूर करना और उसे सुख पहुंचाना, यह सहृदयता का भाव है। सहृदयता का अर्थ है हृदय का एक हो जाना। गृहवासियों के देह चाहे भिन्न–भिन्न हैं परन्तु उन सब के हृदय एक हो सकते हैं। जब सब के हृदय एक हो जाते हैं तो दूसरे का दुःख भी अपना दुःख लगता है। यह भावना सहृदयता की भावना है। उदाहरण के लिये दो सहेलियां साथ बैठी रो रही थी। अध्यापिका आई तो उसने पहली से पूछा––तुम रो क्यों रही हो? उसने उततर दिया––मेरे माता जी बहुत बिमार हैं। तभी अध्यापिका ने साथ वाली लड़की से पूछा––और तुम क्यों रो रही हो? उसने उत्तर दिया––मैं अपनी सहेती के दुख से दुखी हूं। यह है सहृदयता की भावना ।

हमारे प्रेरणा के स्रोत परमात्मा हमें दूसरा उपदेश ''सांमनस्य'' का देते हैं। सांमनस्य शब्द का अर्थ है मन की एकता का होना। मन प्रतिनिधि है विचारों का और संकल्पों का। विचारभेद तथा संकल्पभेद परस्पर के विरोध तथा विशमता के कारण बन जाते हैं। जहां हृदय मिले हुए होते हैं वहां विचारों तथा संकल्पों की विशमता भी कम हो जाती है, वहां एक दूसरे के विचारों और संकल्पो का उचित मान तथा आदर करने की ओर झुकाव रहता है। गृहवासियों में एक ओर जहां परस्पर सहृदयता का भाव होना चाहिये वहीं उन में सांमनस्य का भी भाव होना चाहिये। इससे गृहस्थ स्वर्ग धाम बनता है और गृहस्थ से रोग, शोक, दुःख व अशान्ति दूर भाग जाते हैं। जिन परिवारों में यह दो भावनायें होती हैं वहां वैर भाव नहीं रहता और प्रेम का वातावरण बन जाता है। आपस में वैर का या द्वेशका भाव ऐसे व्यक्तियों में जड़ नहीं पकड़ता जहां कि सहृदयता और सांमनस्य के बीज बोए गये हों। गृहस्थ के प्रत्येक सदस्य को चाहिये कि वह एक दूसरे के संग और साथ की उग्र कामना करें। एक दूसरे से मिलने–जुलने के उत्कट अभिलाशी हों। इस से परस्पर प्रेमभाव व सजय़ता रहता है। परस्पर न मिलने–जुलने से प्रेम की मात्रा कम होती जाती है। इसलिये सभी गृहवासियों को एक दूसरे के साथ रहने के लिए उग्र कामना करनी चाहिये।

यदि हम वेदों का स्वाध्याय करेंगे तो हम वेदों में बहुमूल्य रत्नोंको प्राप्त कर सकते हैं। वेदों की सर्वोपरि महत्ता के कारण हमारे ऋषियों ने वेदों को ईश्वरीय ज्ञान स्वीकार किया और इसे मानवमात्र के कल्याण के लिये वेदों का रूप दिया।

मनमोहन कुमार आर्य फोन:09412985121

यक्ष युधिष्टर सम्वाद

डा ओम प्रकाश सेटिया

यक्ष–संसार का सब से बड़ा आश्चर्य क्या है?

युधिष्टर–हर रोज हम किसी न किसी प्राणी को मरता हुआ देख रहें हैं। हमारे पूर्वज भी आये और इस संसार से चल दिये। फिर भी हम यह इच्छा लेकर जी रहें हें कि हम कभी मरें नहीं। यही सब से बड़ा आश्चर्य है।

यक्ष–धरती हमारा पालन करती है और इसे मां कहा गया है। क्या इस से भी उपर कोई है?

युधिष्टर–जो मां हमें जन्म देकर पालती है वह इस धरती से भी उपर है।

यक्ष–आकाश से भी उपर कौन है?

युधिष्टर–पिता आकाश से भी उपर है।

यक्ष– वायु से भी तेज कौन भागता है?

युधिष्टर– मनुष्य का मन वायु से भी तेज भागता है।

यक्ष–जंगली घास से भी तेज क्या वस्तु पैदा होती है?

युधिष्टर–**मनुष्य में चिन्तायें** जंगली घास से भी तेज पैदा होती है?

यक्ष–मनुष्य की आत्मा कौन है?

युधिष्टर– बेटा ही मनुष्य की आत्मा है।

यक्ष–मनुष्य धर्म, यश और प्रतिष्ठा, परम आन्नद और स्वर्ग को कैसे प्राप्त कर सकता है?

युधिष्टर–कार्य में श्रेष्ठता धर्म का साधन है, दान यश और प्रतिष्ठा का साधन है, अच्छा आचरण परम आन्नद देता है और सत्य ही स्वर्ग की सीढ़ी है।

यक्ष–क्या चीज मनुष्य को विद्वान और विवेकशील बनाकर खतरे से बचाती है?

युधिष्टर–विद्वानों का साथ ही मनुष्य को विद्वान बनाता है। वड़ों की सेवा उसे विवेकशील बनाती है। साहस ही उसे खतरे में बचाता है और तप से वह उंचाईयों को छू जाता है।

यक्ष–तप क्या है?

युधिष्टर–अपने पर अनुशासन रखते हुये, इन्द्रिय निग्रह ही तप है।

यक्ष–ज्ञान क्या है और मन की शान्ति क्या है

युधिष्टर–आत्मा द्वारा परमात्मा को जान लेना ही ज्ञान है। मन का स्थिर होना मन की शान्ति है। सब के लिये सुख की कामना ही श्रेष्ठ प्रार्थना है।

यक्ष–गृहस्थ सुख की कुंजी क्या है

युधिष्टर–ठीक साधनों द्वारा कमाये धन द्वारा, त्याग भाव से, ईच्छाओं की पूर्ती ही गृहस्थ सुख की कुंजी है।

डा ओम प्रकाश सेटिया सर्म्पित आर्य समाजी और चण्डीगढ़ सैक्टर–32 के प्रधान हैं।

9872811464, 0172–2660466

जीवन प्रेरणा

उठ जाग मुसाफिर भोर भई,
अब रैन कहां जो सोवत है,
जो जागत है सो पावत है,
जो सोवत है सो खोवत है।।

टुक नीदं से अखियां खोल जरा,
और अपने प्रभु से ध्यान लगा,
यह प्रीत करने की रीत नहीं,
प्रभु जागत है, तू सोवत है।।

जो कल करना, सो आज कर ले,
जो अज करना, सो अब कर ले,
जब चिड़ियन ने चुग खेत लिया,
फिर पछताये क्या होवत है।।

नादान भुगत करनी अपनी,
ऐ पापी! पाप में चैन कहां?
श्रब पाप की गठरी शीश धरी,
फिर शीश पकड़ क्यों रोवत है।।

योद्धा बने न कि चिन्ता में रहें

हमारे प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी ने मन की बात के अन्तरगत, बच्चों के नाम सन्देश में बहुत ही प्रेरणात्मक बात कही कि हम समस्याओं से जूझने वाले योद्धा बने न कि चिन्ता में रहे (Be a warrior and not a worrier)

हम सब का कोई न कोई उदेश्य और ध्यय होना चाहिये, उसे पाने के लिये हम एक योद्धा की तरह जूझे न कि उसके बारे में सोचते रहें और चिन्ता करते रहें।

हर बच्चा प्रथम नहीं आ सकता इसलिये आवश्यक यह है कि आप हार जीत की चिन्ता किये बिना, मेहनत और ईमानदारी के रास्ते को अख्तयार कर हिस्सा लेना सीखे। कोई भी जीत आखरी जीत नहीं। हम सोचते है कि अगर अच्छे कालेज में दाखला मिल गया या अच्छी नौकरी मिल गई तो जीवन कामयाव हो गया यह हमारी सोच गलत है। कोई भी सफलता चिरस्थाई नहीं। जीवन के हर मोड़ पर चुनोतियां अलग अलग होंगीं। कोई भी हार हमें हतोसाहित न करे। जरूरत इस बात की है कि हम पूरी लगन से व इमानदारी से हर काम को करे ओर करते हुये अपनी शारिरक, मानसिक और अध्यात्मिक उन्नति से नजर दूर न करे। सदा याद रखें अगर आप ने पूरी लगन के साथ काम किया है तो आपकी मेहनत बेकार नहीं जायेगी। कभी न कभी किसी न किसी रूप में आपको फल अवश्य मिलेगा।

मेहनत करना खुश रहने का रहस्य है इसी तरह केवल चिन्ता करना और प्रयत्न न करना दुखों का दरवाजा है। चिन्ता चिता के समान है जो कि आपके उत्साह को खत्म कर देती है। जब आप केवल चिन्ता करते हैं तो आपको आपके सामने मुसिवतों का पहाड़ नजर आता है पर जब आप काम करने के लिये कूद जाते हो तो आपको ऐसा लगता है कि कोई अदृश्य शक्ति आपके लिये रास्ता बनाती जा रही है और कुछ समय बाद ऐसा महसूस होगा कि मैं तो इस से भी मुश्किल और बड़े पहाड़ में से रास्ता बनाकर निकल सकता हूं।

''मैने चिन्ता नहीं करनी अपितु समस्या से जूझना है'' यदि आप यह अपने जीवन का अंग बना लेते हैं तो कोई भी मंज़िल आपके लिये मुश्किल नहीं। यदि हम अमेरिका के सब से मशहूर राष्ट्रपति अबराहम लिंकन के जीवन की मुख्य घटनाओं के दर्शन करेंगे तो हमें मालुम पड़ेगा कि उनके जीवन की सफलता का राज ही यह था कि उनके लिये कोई भी हार इतनी वड़ी न थी कि उनकों हतोसाहित कर दे।

गाय तो गाय है, आर्य समाजी या पौराणिक नहीं होती

अजमेर से एक आर्य समाज की पत्रिका छपती है। उस पत्रिका कें 15 पेज तो विभिन्न रूप में दान इकठठा करने के लिये भरे होते हैं। उस में गउशाला भी है। मैं इतना जानता हूं कि हर शहर में कम से कम एक गउशाला तो है। उदाहरण के लिये हरियाणा में 350 रजिसट्रड गउशाला है। ऐसे में अच्छा नहीं कि हम पहले अपने शहर कसबे में गउशाला को ठीक अच्छा रखने के लिये सहयोग दें। न केवल पैसा दें अपितु वहां जा कर देख भी आयें। वैसे भी दान वहां देने की पहल करनी चाहिये जो आपको नजर आता है और जो उसका जमा – खर्च भी छापते है।

पंजाब केसरी का शहीद फंड इसी लिये इतने सालों से सफलता से चल रहा है क्योकि वह हर सप्ताह हिसाब लिखते हैं, कितना पैसा आज तक आया, कितना खर्चा हुआ और कितना बैंक में पड़ा है। यह सभी दान लेने वालों के लिये शिक्षा है।

मोदी का प्रधानमन्त्री के रूप में एक वर्ष

प्रधानमन्त्री श्री नरेन्दर मोदी के एक साल के कार्यकाल की सब से बड़ी विशे**षता यह रही कि कुछ विषयों में तो उन्होने बहुत ही अच्छे अंक प्राप्त किये जिसे की डिसटिंकशन** (to pass with distinction) **के साथ पास होना कहा जायेगा, जब की कुछ अन्य विषयों में** वे बहुत ही कम नम्बर ले सके या यूं कहें फेल हो गये। इस में खास बात यह रही कि जो वि**षय** आम व्यक्ति को छूते हैं उन में वे फेल रहे इस लिये लोकतन्त्र में इसे फेल होना ही कहा जायेगा।

जिन वि**षयों में** प्रधानमन्त्री श्री नरेन्दर मोदी ने बहुत ही अच्छा कार्य किया वे हैं, विदेशों में भारत की छवी को उभारा, पडोसी देशों से सम्बन्धों में सुधार और भारत की एक उभरती हुई शक्ति के रूप में पहचान, प्रशासन की उपरी तह पर भ्रष्टाचार की घटनायें न के बराबर हुई हैं हालाकिं निचली तह पर भ्रष्टाचार वैसे ही है। प्रशासनिक निर्णय तेजी से लिये जा रहें हैं और सब से बड़ी बात देश का नेतृत्व सशक्त हाथों में लगता है, जिस कारण मनमानी कम है।

पर जो विषय महत्वपूर्ण हैं और आम व्यक्ति को छूते हैं उस में प्रधानमन्त्री की पकड़ नजर नहीं आई है जिस कारण वह कुछ भी ऐसा न कर पाये जिस से आम व्यक्ति को राहत मिलती। कुछ उदाहरण हैं । पहला, बुलेट टरेन (Bullet trains) की बात हो रही है पर 80% रेल यात्री मजबूरी में असुरक्षित यात्रा करते हैं, उसके लिये कोई कदम नहीं। यह बुलेट टरेन (Bullet trains) जैसी सुविधायें तो सिर्फ उपर के 10% ही प्रयोग कर पाते हैं, बाकी को इस का कोई लाभ नहीं होता। उनको तो तब राहत मिले अगर द्वितिय श्रेणी के अनारक्षित डिब्बों कीं जिस में 80% लोग यात्रा करते हैं की हालत में सुधार हो । ऐसा न तो सोचा गया, कार्य में लाना तो दूर की बात है। सर्विस टैक्स की दर बड़ा दी गई और लगभग हर चीज सर्विस टैक्स पर लागू कर दिया यहां तक की जो महीने में 100 रूप्ये टैलीफोन पर खर्च करता है या फिर द्वितिय श्रेणी सलीपर में यात्रा करता है। ऐसे में छोटे व्यक्ति का घर का खर्च बढ़ गया है। जब की चाहिये यह था कि यह सब टैकस कुछ सीमा से उपर ही लगाये जाते और आम व्यक्ति को इसके भार से बचाया जाता। उदाहरण के लिये टेलिफोन के मासिक 500 रूपये तक के बिल पर सर्विस टैक्स की छूट होनी चाहिये थी। अन्तर–**राष्ट**रिय बाजार में तेल के भाव उस रफतार से नहीं बढ़े जिस रफतार से देश में **पैटरोल** और डीजल के भाव पुनः बढ़ा दिये गये।

श्री नरेन्दर मोदी की यह सोच कि लोग सुविधा चाहते हैं ओर उस को हासिल करने के लिये कुछ भी खर्चने को तैयार हैं बिल्कुल गलत है। भारत जैसे गरीब देश में ऐसी स्थिती नहीं हो सकती। यहां सुविधा तो चाहते हैं बशर्तिया पहुंच में हों। मुश्कित यह है कि इस 130 करोड़ जनसंख्या वाले देश में जो लोग सब कुछ भोग रहें हैं, उस में चाहे हजारों रूप्यें की टिकट ले कर IPL क्रिकेट मैच देखना हो, अच्छी गाड़ियों में घूमना हो, चाहे उन का प्रतिशत केवल 10% ही है पर यह संख्या 13 करोड़ हो जाती है। यह 13 करोड़ संख्या कम नहीं होती और ऐसी फोटो सामने आती है कि सब और सम्पन्नता ही सम्पन्नता है। पर सच्चाई कुछ और ही होती है जैसे कि

2004 में इंडिया शाइनिंग के समय हुआ था।

श्री नरेन्दर मोदी की मुश्किल इस लिये भी और बड़ गइ है क्योकि जो भी उपर के मन्त्री है चाहे किसी समय में साधारण लोग थे पर 15–20 साल राजनीति में रहकर जिस में जनता के खर्चे पर हर जगह पांच सितारा सुविधायें लेना हैं, उन्हे गरीबी की कोई भनक ही नहीं रही है। जो नीचे के नेता है उन में इतना साहस नहीं कि बड़े नेताओं को सच्चाई से अवगत करायें।

श्री नरेन्दर मोदी को कुछ परिवर्न करते होंगे। उदाहरण के लिये अरूण जेटली चाहे नामी वकील है, इमानदार है पर जहां तक वितिय मन्त्रालय का प्रश्न है उन की समझ से बाहर है। उसे बदलना चाहिये। यही हाल रेलवे मन्त्री प्रभु का हैं। वह चीन जैसे सम्पन्न देश के लिये तो ठीक है पर भारत जैसे विशमिताओं से भरे देश के लिये नहीं। दूसरा प्रधानमन्त्री को अपने लोक सभा के सदस्यों को सुनना चाहिये। ऐसा माहोल बनाये कि उनके दल के लोग अपने मन की बात कह सकें। प्रधानमन्त्री तो अपने मन की बात लोंगों को सुना देता है पर यह भी आवश्यक है कि लोगों के मन की बात भी प्रधानमन्त्री तक पहुंचे। भारतीय संस्कृति की बात कम, और आम व्यक्ति के सुख की बात अधिक करनी होगी। कुछ उनके दल के ऐसे व्यक्ति जो कि पहली बार महत्वपूर्ण्र पदों पर आयें हैं, वे अपना अधिक समय और ताकत, उनकी प्रशंसा या यूं कहे चमचागिरी में बिताते हैं। यह तसवीर हरियाणा में अधिक देखने को मिल रही है। श्री नरेन्दर मोदी को स्वयं इस बारे में कुछ करना होगा। अच्छा होगा यह बड़ी–बड़ी रैलियों के कलचर से निकल कर वही समय और पैसा लोगों के उत्थान पर लगाया जाये।

The boss is not always for BOSSING OVER"

There were about 70 scientists working on a very vital project. All of them were really frustrated due to the pressure of work and the demands of their boss but everyone was loyal to him and did not think of quitting the job.

One day, one scientist came to his boss and told him - Sir, I have promised my children that I will take them to the exhibition going on in the town. So I want to leave the office at 5:30 pm.

His boss replied 'OK, You're permitted to leave the office early today.

The Scientist went back and started working on job in hand. He continued his work after lunch. As usual he got involved to such an extent that he looked at his watch when he felt he was close to completion. The time was 8.30 PM. Suddenly he remembered of the promise he had given to his children.

He looked for his boss, He was not there. Having told him in the morning itself, he closed everything and left for home.

Deep within himself, he was feeling guilty for having disappointed his children. He reached home. Children were not there. His wife alone was sitting in the hall and reading magazines.

The situation was explosive, any talk would boomerang on him. His wife asked him 'Would you like to have coffee or shall I straight away serve dinner if you are hungry.

The man replied 'Well! If you are going to have coffee, I too will have but what about Children??'

Wife replied 'You don't know? Your Boss came here at 5.15 PM and has taken the children to the exhibition '

What had really happened was ... The boss who granted him permission was observing him working seriously at 5.00 PM. He thought to himself, this person will not leave the work, but if he has promised his children they must enjoy the visit to exhibition.

So he took the lead in taking them to exhibition

The boss does not have to do it every time. But once it is done, loyalty is established.

That is why all the scientists at Thumba continued to work under their boss even though the stress was tremendous.

By the way , the boss was none other than **Dr. APJ Abdul Kalam , Ex - President of INDIA**

Mother of all reforms overhaul our judicial system

Bhartendu Sood

One reform that can reform everything else in our country is to overhaul our judicial system. Till such time we are not able to do it, all other reforms are meaningless because everybody on the wrong side finds protection in our present judicial system which rests on the principle that all accused are innocent until proved guilty by the law of the land whether he is rapist, murderer or scamster and onus is on prosecution to establish the crime with evidences which most of the time is not that easy to do as it appears to be and with the result acquittals after lengthy trials has become the order of the day. This system has only trials but lengthy trials, not in one court but in many courts and the end vertict often disappoints the victim. See the irony, eminent lawyer is the one who can save the perpetuator of heinous crime from gallows. Cases continue to hang not for years but for decades and lawyers are paid for keeping the cases hanging and not for earning a fast verdict? What will you say of the system in which one court after 19 years of trial unseats a CM of the state, but the appellate authority finds no merit in the ground adopted by the lower court and orders her acquittal in matters of few minutes? Sanjay Khan accused in 1993 Mumbai blast case is rewarded punishment after 20 years. But for the public outcry, Manu Sharma would have been a free man, probably some politician of the reckoning even. If this happens in executive, many a heads will roll but when it comes to judiciary, we close up the matter by saying that justice has prevailed but at what cost, no body is prepared to bell the cat. Common man is tad disappointed but somehow has shown restraint when it comes to attacking judiciary but the screen that insulated judiciary from the public outrage is getting thinner and thinner. Question is if people can launch agitation against the police, politicians then judiciary can also be the target one day whose performance has created distrust among the masses.

Man convicted for corruption if continued to be the Chief Minister of the state and Cabinet Minister fault lies with our judicial system. Let us walk the dictum - 'Justice delayed is justice denied.'

We need to appreciate that the present system was constituted by British when things were different from what we have today, especially in respect of crimes and technology and to top it all we were slaves and not self rulers. India was a British Colony not a vibrant democracy. Thomas Babington Macaulay had drafted Indian Penal Code which was brought into force in 1862. The Code of Criminal Procedure was also drafted by the same commission. Host of other statutes and codes like Evidence Act (1872) and Contracts Act (1872) are also part of British legacy primarily framed primarily for slaves. So to think that this system could work in a free democracy on the cusp of emerging an economic power is to live in fool's paradise. This was not changed by the fathers of our constitution because they themselves were the product of that Macaulay System.

We conveniently forget that the present Anglo-Saxon jurisprudence, though seemingly egalitarian, came in to practice in India in 1861 but before that we had our own system which was not only fast but the

punishment served the purpose of retribution and set an example to deter and prevent others to take to crime. Village assemblies and the king administered fast justice, with the assistance of select persons known for their wisdom and townsfolk. People directly participated in adjudicating guilt and awarding punishment. The emphasis was on the good of the society. Now when this Anglo-Saxon system has shown signs of bursting at the seam in the changed environ, will it be not befitting for law makers to revisit our ancient system of jurisprudence.

We publish the comparative data for various countries for the ease of doing business but why did we not feel it necessary to publish the data with regard to the time taken for nailing the convict? When it comes to judicial decisions, even Pakistan is placed much higher than India. Likewise in China, cases are decided with in a year.(Their President's case was decided in eleven months and he is serving the term) When we publish such data, perhaps our judiciary may come to face with the reality.

More than 2.5 lac under trials are languishing in jail but if you are a celebrity with deep pockets and can hire the most expensive lawyer, you can be out with in hours after conviction.

What government really needs to do is to adopt the style and approach of the good corporate. When they appoint a CEO, they ask him to work out his own system and they desist from forcing their own model on him.(example appointment of Sikka in Infosys) Likewise Govt should constitute a group of eminent judges and legal luminaries and ask them to prepare a model , which may nail even the most influential culprit with in a year and he should be seen serving his term in the second year. A dictum 'Justice delayed is justice denied' is not for giving sermons alone, judiciary needs to walk the talk. Parliamentarians should rise above the tendency to oppose everything and show maturity in passing a bill which can usher in a new era. If the fast retribution becomes a reality, only then other reforms will work otherwise we are in for the most difficult times. **Broadly we need to reduce the plethora of laws and number of appellate Courts.** If one is really keen to follow China then their legal system is the one which our legal pundits must study and follow. The special feature of Chinese legal system is few laws and fast justice.

अगर आपको कुछ कहना है या पत्रिका subscribe करनी है
कृप्या निम्न address पर सम्पर्क करें
भारतेन्दु सूद, 231 सैक्टर– 45-ए चण्डीगढ़.160047
0172.2662870, 9217970381, E mail : bhartsood@yahoo.co.in

पत्रिका में दिये गये विचारो के लिए लेखक स्वयं जिम्मेवार है। लेखको के टेलीफोन न. दिए गए है न्यायिक मामलो के लिए चण्डीगढ़ के न्यायलय मानय है।

Publisher & Printer Bhartendu Sood **Printed at** Umang Printer, Plot No. 26/3, Ind. Area, Phase-II, Chd. 9815628590
Owner Bhartendu Sood **Place of Publication** # 231, Sector 45-A, Chandigarh 160047
Phone : 0172-2662870 (M) 9217970381 Name of Editor : Bhartendu Sood

श्रेष्ठ कर्म ही धर्म है

अशोक कुमार

वही कर्म जो पाप, स्वार्थ और द्ववेष रहित होते हैं श्रेष्ठ कहलाते हैं। कल्याण, विकास-कारी, कर्म पुण्य प्रदान होते हैं, ऐसे कर्मों को करने वाला, जानने वाला पुरूषोतम बन जाता है। जिसका वर्णन वेदों और शास्त्रों में है। गीता का उपदेश है, करूणा को अपनाओ, असत्य का आश्रय न लो, सत्य-पथ अपनाओ, पवित्रता से रहो, कल्याण मार्ग को अपनाओ और सेवा करो। किसी भी प्राणी से वाणी, मन, शरीर से बैर न रखो अर्थात आपका कर्म सबके साथ मैत्रीपूर्ण हो, त्यागरहित हो, नम्र व्यवहार हो। अगर आपका कर्म काम, क्रोध, लोभ, अहंकार युक्त है तो आपका कर्म कुकर्म, बन जायेगा।

आप जो कार्य करते हैं उसमें जल्दबाजी न हो बल्कि विवके का प्रयोग करो, लक्ष्य प्राप्ती करने के लिए आपके साधन, विधियां, विवेक और पुरूषार्थ लिप्त हों। जीवन की सफलता के लिये अति सावधान होकर चलना पड़ता है, अर्थात मैं क्या देखूँ क्या न देखूँ, क्या सुनू, क्या न सुनूँ, क्या करूं, क्या न करूं।

सरदार पटेल ने कहा है कि लोहा गर्म भले ही हो पर हथौड़ा तो ठण्डा रह कर ही अपना कार्य कर सकता है। इसका सीधा अर्थ यह है कि चाहे दूसरा व्यक्ति क्रोद्ध में है हम शांत रह कर भी उस मनुष्य से निपट सकते है। आपके विचार, ऐसे कर्म उत्पत्ति-अंकुरित करें जिससे ज्ञान योग, कर्म योग, समग्र समाज के लिए सुविधा बनें। भारतीय संस्कृति कर्म धर्म पर आधारित है, जैसा कर्म वैसा फल। आपका फल ही बता सकता है कि आपका कर्म पुण्य वाला था या पाप वाला, वही आपकी मानसिकता और सोच की और संकेत करता है। क्या आपका कर्म आप तक सीमित है या समाज प्रभावी है? क्या आप अपने लाभांश हेतु ही सोच रहे हो या दूसरो का अच्छा बुरा भी सोच रहे हो ? कहीं अपनी लोकप्रियता के लिये आप दूसरों के लिए कांटे तो नहीं बीज रहे हो? आपके कर्म एक दीपक, एक वृक्ष, एक ध्रुव तारे के सम्मान होने चाहिये, तभी आप उसे श्रेष्ठ कर्म कह सकते है।। मैं देखूं क्या मेरा कर्म विनाशता तो नहीं फैला रहा, दूसरों को पीड़ा तो नहीं दे रहा भयभीत तो नहीं कर रहा है। मैं देखूं क्या मेरा कर्म दिखावा तो नहीं अगर ऐसा है तो अधर्म है। अगर कर्म विकास कल्याण, सुविधा, धैर्य, प्रेरणा, निर्माण कर रहा है, प्रेम और विश्वास को पैदा कर रहा है तो धर्म है। जो अज्ञानता, अंधकार मिटाऐ तो वही उत्तम कर्म है और वही धर्म है।आपका धार्मिक आचरण मित्र बनाता हैं और जो आचरण इस के विपरीत है वह शत्रु पैदा करता हैं। ऐसा कर्म जो मस्तिष्क में स्वर्णता भरे समाज को सही मार्ग-दर्शन कराऐ वही श्रेष्ठ कर्म धर्म बनते हैं।

जब गुरू गोविन्द ने भाई घनैया से पूछा कि तुम लड़ाई के मैदान में हमारे शत्रु के घायल सिपाईयों को भी पानी क्यों पिलाते हो? भाई घनैया ने कहा–गुरू जी, मै जब भी किसी घायल को देखता हूँ तो मुझे उस में मुसलमान या सिक्ख नहीं, बलिक गुरू नजर आता है। यही है श्रेष्ठ कर्म

महात्मा बुद्ध कहते थे कि ''आप द्वीप भव'' यानि अपने दीया आप बने जो ऐसे कर्म हैं वही धर्म बनें।

प्रश्न है हमारे कर्म अच्दे कैसे हों? अच्छे व बुरे कर्मो के पीछे हमारा ज्ञान व संस्कार काम करते हैं, कर्मो को प्रवृत करने वाला ज्ञान है। ज्ञान में त्रुटि आते ही कर्म में त्रुटी आ जायेगी। इसलिये व्यक्ति के लिये सत्संग बहुत आवश्यक है। सत्संग के साधन है अच्छी पुस्तकों का स्वाध्याय, अच्छे व्यक्तियों की संगती व उनकी बातों को सुनना व मनन करना ईश्वर भक्ति––जिसका सीधा अर्थ है ईयवरीय गुणों को धारण करना।

दुर्योधन और शकुनी रचित कृत्य जो अधर्म-दुष्कर्म बन गए जब कि

विदुर, बुद्ध, कबीर, रविदास द्वारा समाज सुधार के कार्य धर्म बन गए। कर्म ऐसा हो जो शक्ति, आनन्द, ज्ञान, भक्ति का उपदेश दे, मानवता का उत्थान करे, एकांत में दामिनियां न डरें, जोड़ने का प्रयास हो, मानवता न शर्मसार हो, आपके कर्म ही नव-निर्माणित धर्मों की रूप-रेखा बनाते हैं। धर्म केवल पाठ-पूजा-चिंतन नहीं बल्कि आपके कर्म जो पाप-पुण्य, देव-दैत्य की परिभाषाऐं रचते हैं, मानव सोच, प्रयोग, संयोग के योग के संगम बनते हैं वही उत्तम धर्म कहलाते हैं। 'धर्म' कोई बाहरी चिह्न, कर्मकाडं, भाषा व आडंबर का नाम नहीं है न ही धर्म का किसी स्थान विशेष से सम्बंध है। बल्कि उन शाश्वत गुणों का नाम है जिनको जीवन में धारण करने से मनुष्य स्वयं तो सुखी बनकर उन्नति व समृद्धि की ओर अग्रसर होता ही है साथ ही अन्य प्राणियों को भी सुखी बनाता है। जैसे सत्य बोलना, सद्व्यवहार करना, धैर्य, सहनशीलता, किसी से द्वेष, ईर्ष्या व घृणा न करना, परोपकार करना, अपने काम को ऐसे करना जिससे दूसरों को सुख पहुंचें आदि। धर्म दिखावा नहीं हैं, रूढ़ी नही है, प्रदर्शन नहीं हैं धर्म एक ऐसा पवित्र अनुष्ठान है जिसमें आत्मा का शुद्धिकरण होता है।

ऐसा कर्म जो शेष के लिए आदर्श हो, मरहम का सबब बने, ऊँच-नीच का अंतर भरे, मानव को ही प्रभु माने, क्षमायुक्त कर्म हो, जैसे ग्राहम स्टेंस एक आस्ट्रेलियाई मिशनरी को उड़ीसा में दो पुत्रों सहित जिंदा जला दिया गया था पर उनकी विधवा ने कहा कि जलाने वालों को माफ कर देना चाहिए यही अहंकार रहित उत्तम धर्म है।

चाणाक्य का कहना है कि काष्ठ, पत्थर, धातु, मिट्टी की मूर्तियों में प्रभु का आवास नहीं होता ये तो मनुष्य के भाव में विद्यमान है। उनके अनुसार जिस धर्म में दया नहीं उसका त्याग ही कर देना चाहिए, अर्थात तुम्हारा कर्म अगर श्रेष्ठ है तो वही भविष्य में उत्तम धर्म बनता है। हर कोई जी सके, सुख की सांस ले सके, प्राचीन संस्कृति, साहित्य सम्पदा जो हमारी सदियों से धरोहर है, की सुरक्षा भी एक मनुष्यता के प्रति एक सेवा है और उत्तम धर्म है।

रविन्द्रनाथ ठाकुर जी का कहना है कि चंद्रमा अपना प्रकाश सम्पूर्ण आकाश में फैलाता है, परन्तु कलंक अपने ही पास रखता है। ऐसा ही धर्म चाहिए। जिस प्रकार अन्न भूख मिटाता वैसे ही सदगुणी धर्म को जीवन में धारण कर दोष-दुर्गणों को भगाता है, जो सूर्य किरणों के सम्मान सभी वस्तुओं को रंग-रूप देता है-अथर्व वेद। इसलिए श्रेष्ठ कर्म परोपकारी है, निराशाओं को मिटाता है, जीवनदायनी, जीवन-जोत की बाती बनता है, कर्म ही दैवी शक्ति बनता है, उत्तम धर्म का प्रतीक है, उत्तम धर्म से अभिप्राय है कि किसी द्वारा किये काम से जो सुख, आनन्द, सकून मिलता है और मन से एक अच्छी आह, आर्शीवाद और वाह के शब्द निकलते हैं वही उत्तम धर्म का लक्ष्ण है।

जो व्यक्ति सब कर्मो को परमात्मा को अपर्ण करके और आस्क्ति को त्यागकर कर्म करता है वह व्यक्ति जल में कमल के पत्ते की भान्ति पाप से लिप्त नहीं होता। कहने का तात्पर्य यह है कि संसार के सब पदार्थों को त्यागमय भाव से भोगो पर इनक साथ आसक्त न हों। यही श्रेष्ठ कर्म है

M/S AMMONIA SUPPLY COMPANY

(An ISO 9001-2008 Certified Company)

Joins " VEDIC THOUGHTS" in its noble Pursuit of spreading 'Moral Values

प्रभु के दर्शन कौन पाता है

आहिंसा, सत्य, चोरी न करना, ब्रहमचर्य के नियमों का पालन, अपिरग्रह तथा शौच संतोष आदि नियमों के पालन से ही आम्ता पवित्र होती है और शुभ कर्म में रत पवित्र आत्मा में ही प्रभु के दर्शन होते है।

उपनिषद में मन्त्र आता है जिसका भावार्थ है--जिसका मन बुरे विचारों से भरा हुआ है और अच्छे विचारों के लिये मन में कोई स्थान नहीं व अच्छे विचारों के प्रति विरोद्ध व अवेहलना है, जिसका मन हर समय बुरे कृत्यों में लिप्त रहने के कारण अशान्त, चिन्तित और व्याकुल रहता है, जो हर बात को हर चीज को सन्देह से देखता हो, जिसका मन चंचल है और कभी स्थिर नहीं रहता हो, ऐसा मनुष्य कभी भी ईश्वर को नहीं जान सकता।

SUPPLIERS OF ANHYDROUS AMMONIA AND LIQUOR AMMONIA

D-4 Industrial Focal Point, Derabassi, District (Mohali) Punjab

Contact:- Rakesh Bhargav, Branch Manager 093161-34239, 01762-652465

Fax 01762-282894. Email- asco.db@ascoindia.com & ascodb@gmail.com

Thoughts of a 'not-so-proud' Indian

Salil Desai

The PM raised heckles when he claimed recently that people felt no pride in being Indians before he arrived. He was deservedly slammed. But can we really claim to be proud of the following traits that make up our national character?

Indiscipline: Rules, discipline, punctuality, civic responsibility mean very little to us. Even official duties are often done grudgingly and concepts of professionalism, ethics and commitment are very flexible. Observing discipline militates against our deepest sensibilities.

Indifference and apathy: We are a nation of bystanders. If something doesn't directly affect us, we turn a blind eye and are blissfully unencumbered by a compelling sense of right and wrong.

Insularity and smugness: We profess to know about every subject and comment authoritatively on everything. We are untroubled by our colossal ignorance, smug in our national wisdom, culture, beliefs, knowledge and worldview. As Peter Sellers playing an Indian in 'The Party' says, “In India, we don't think who we are. We know who we are.” That's how high our insularity quotient is.

Corruption: Our disgust with big-ticket corruption notwithstanding, dishonesty, graft and black money thrive as a way of life. We blame politicians, babus, governments and the system but the culture of corruption has contaminated us all.

Unbridled materialism: We tom-tom our spirituality, but India is a rapaciously materialistic society today. What lives do we lead outside of work and economic activity? Shopping, consuming, eating out, watching movies and TV, expensive holidays, partying and festivities, networking, renovating and furnishing our houses. That's about it! How many Indians are involved in social, cultural, humanitarian, artistic, creative, sports, mind-expanding or soul-enriching pursuits? How many devote time to community improvement or furthering

important values? Pleasure-seeking seems to be our only ideal.

Filth: No matter how many Swachh Bharat initiatives are taken, but it's success remains doubtful unless there is a paradigm shift in our predilection to litter, spit, defecate and be prodigiously filthy?

Noise: Constant cacophony dominates our public, private and residential areas, as if there is no space for the pleasures of silence in our society. Vehicular and construction sounds pound us all day. Music and sound systems blare away all year long, as loud, ostentatious celebrations - religious, political and personal —have become the norm. There is no respite. What exactly do we try and drown out with all the noise we make? Why are we so allergic to silence?

Rudeness & discourtesy: What explains our shocking lack of manners and basic courtesy to fellow citizens? We talk of our ancient culture and yet we mouth abuses, honk, disturb, speak loudly, push, rarely thank or greet, never say sorry to neighbours, passersby or strangers.

Jingoistic nationalism and religion: Does national pride have to be jingoistic? Can't religion remain within our homes instead of making a public spectacle that turns it into a crass, perverse assertion of superiority? Are our nationalism and religious beliefs so fragile that we remain forever touchy and take offence?

Intolerance and illiberal attitudes: When will we stop feeling threatened by different ideas and interpretations of culture, tradition, lifestyle and philosophy? Isn't it time we got over the medieval impulse of imposing majoritarian, narrow or conservative worldviews?

Tokenism: Can we go beyond raging on social media, lighting candles and behaving like self-righteous humbugs?

No doubt Indians have a lot to be proud of but unless we introspect and become a nicer, friendlier society, our countrymen are going to keep migrating abroad in search of a better quality of life, irrespective of who is the PM.

प्रकाश औषधालय

थोक व परचून विक्रेता हमदर्द, डाबर, वैद्यनाथ, गुरूकुल, कांगडी, कामधेनु जल व अन्य आर्युवैदिक व युनानी दवाईयाँ

Wholesaler & Retailer of :

HAMDARD, DABUR, BAIDHYANATH,

GURUKUL KANGRI, KAMDHENU JAL

& All kinds of Ayurvedic & Unani Medicines

Booth No. 65, Sec. 20-D, Chandigarh

Tel.: 0172-2708497

जीवन वही है जो दूसरों के लिये भी जीया जाये

नीला सूद

अथर्व वेद में कहा है,'' जीवन जीवन तभी है जब दूसरों के साथ मिल कर रहा जाय। **मनुष्य** एक समाजिक प्राणी है, अकेला नहीं रह सकता । भगवान उन्ही को प्यार करता है जो उसके बनाये प्राणियों से प्यार करते है, उस में सभी आ जाते हैं चाहे पक्षी, जानवर या **मनुष्य।** वही व्यक्ति यश का पात्र है जो कि अपने परिवार का दायरा सिमित न रखकर उसे बड़ा कर के ही जीवन जीता है। जहां व्यक्ति एक और अपने माता पिता, भाई बहनों, पत्नि व बच्चों से जुड़ा हुआ है, वहीं दूसरी और समाज के हर प्राणी के साथ भी उसका सम्बन्ध है। व्यक्ति का सम्बन्ध जहां अपने पूर्वजों के साथ है वहीं अपने आने वाली सन्तान से भी है। इसलिये **मनुष्य** का धर्म है कि अपने परिवारिक सम्बन्धों से उपर उठकर समाज के लिये जिये, समाज के लिये काम करे और यदि आवश्यकता पड़े तो किसी बड़े उदेश्य के लिये प्राण नियोछावर करने में भी हिचकचाहट न करे।

वसुधैव कटुम्बकम ––सारा विश्व एक परिवार है, इस वेद की सुक्ती का संदेश है–– हे **मनुष्य** अपने परिवारिक सम्बन्धों से उपर उठकर, सारे विश्व को एक परिवार समझो। उस परिवार में सभी प्राणी आ जाते हैं। भारतीय संस्कृति की दिशा त्याग है, न की भोग। श्तेन त्यक्तेन भुंजीथाः। अर्थात त्याग भाव से भोग। ईश्वर की बनाई हर चीज हमारे प्रयोग के लिये है। पर सब कुछ मेरे लिये नहीं और न हीं मैं स्वयं को इस का स्वामी समझू। ईश्वर की बनाई सम्पदा सब के लिये है। इसलिये मैं उतना ही रखूं या भोगूं जो मेरे लिये आवश्यक हे। वाकी उन सब को लेने दूं जो मेंरे से अधिक जरूरतमन्द है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने इस भाव को आर्य समाज के लिये बनाये एक नियम में यूं कहा है–– **मनुष्य** अपनी ही उन्नती में संतुष्ट न रहकर सबकी उन्नती में अपनी उन्नती समझे। महाभारत युग की यह कथा इस भावना को बहुत सुन्दर व्यक्त कर रही है। दुर्योधन द्वारा पाण्डवों को दिये गये वनवास के दौरान एक वर्ष के लिये कुन्ती समेत सभी पाण्डवों को **भेष** बदल कर रहना था। एक दिन कुन्ती जिस घर में काम करती थी, उस की मालकिन दुख में बहुत रो रही थी। जब कुन्ती ने उस औरत से, जिस का पति मर चुका था, इस तरह रोने का कारण पूछा, तो उस ने बताया–– ''उस कस्बे के बाहर एक बहुत शक्तिशाली राक्षस रहता है । पहले तो वह मनमाने ढंग से कभी भी आकर आक्रमण कर देता व **मनुष्यों**, पशुओं को खा जाता व बहुत नुकसान करता था पर जब कस्बे के मुख्य लोग उसे अपना अनुग्रह लेकर मिले तो वह इस बात पर राज़ी हो गया कि वह मनमाने ढंग से आक्रमण कर के **मनुष्यों**, पशुओ को नहीं खायेगा व कस्बे वालों में से एक व्यक्ति महीने में एक बार पूरे महीने का राशन लेकर उस के पास जायेगा और वह व्यक्ति भी उस के भोजन का अंग होगा। आज मेरे पुत्र की बारी है जो कि मेरा इकलौता पुत्र है। मै न केवल पुत्रहीन हो जाउंगी बल्कि हमारे घर में कोई भी

Chen Shu chu चैन शू चू ताइवान में सड़क पर सब्जी बेचने वाली है जिसने की अपनी कमाई में से 2,31,800 अमेरिकन डालर यानी की 1,करोड़ पचास लाख रूप्ये बच्चों की पड़ाई के लिये दिये। उन्हे Magsaysay Award से संमानित किया गया।

चैन शू चू केवल छे कलास तक पढ़ी है। खुद फर्श पर सो कर वह गरीब बच्चों को पढ़ने के लिये पैसे देती और इस तरह उसने अपने सुखों का त्याग कर हजारों गरीब वच्चों के जीवन को बदला।

पुरूष नहीं रहेगा।''

कुन्ती का हृदय उस की हालत सुनकर पसीज गया। कृतझता से दबी हुई वह अपने मन में सोचने लगी––'' मेरे तो पांच पुत्र हैं, अगर एक चला भी गया तब भी चार पुत्र रह जायेंगे। पर इस बेचारी का तो ले देकर ऐक ही पुत्र है। जब उस को राक्षस खा जायेगा तो बिन सन्तान रह जायेगी, मुझे अवश्य इस की सहायता करनी चाहिये।

उसने घर जा कर पुत्रों से बात की तो वे सभी ऐसा अवसर पाने के लिये आतुर नज़र आये, पर कुन्ती ने भीम को चुना व भीम ने उस शक्तिशाली राक्षस को मार कर सब को राहत दिलाई। पर जो बात यहां देखने वाली है वह है कि कुन्ती समाज के ही दूसरे प्राणी के हित में अपना बेटा भी कुरबान करने को तैयार हो गई।

जैसा हम जानते हैं पिछली सदी में हमारे देश में ऐसी बड़ी बीमारीयां प्लेग व हैजा आदी अक्सर आती थी जिस में लाखों लोगों के प्राण अक्सर चले जाते थे यही नहीं जो बीमारों के ईलाज के लिये जाते थे उनको भी अक्सर ये भयानक रोग अपने शकंजे में ले लेते थे पर फिर भी जब ऐसी आपदायें आती थी तो लोग हज़ारों में दल बनाकर, अपने प्राणों को खतरे में डाल कर, बीमारों के इलाज व सहायता के लिये निकल जाते थे। बाबा आमटे और भक्त पूर्ण सिंह ने हजारों कोड़ पीड़ीतो का ईलाज, जब की उन्हें छूना तो दूर, कोई देख कर राज़ी नहीं था, स्वयं अपने हाथों से किया, बिना इस बात की परवाह किये कि यह भयंकर रोग उनको भी ग्रस्त में ले सकता था।

बाबा आमटे ने कोड़ पिड़ितों कि सेवा को धर्म मानकर हजारों कोड़ पिड़ितों को नया जीवन दिया।

आन्दवन––बाबा आमटे द्वारा बनाया एक ऐसा मन्दिर जहां कोड़ पीड़ीतो का न केवल ईलाज किया जाता है बल्की उन्हे अपने पैरों पर खड़ा करने के लिये 40 के करीब उद्योग भी लगाये गए हैं।

महर्षि दयानन्द सरस्वती व गुरू नानक देव जैसे कई महान व्यक्ति हुए जिन्होने जब देखा कि दुनिया अज्ञान व अन्धविश्वासों के कारण पीड़ीत है तो अपने सब सुख त्याग कर, अपने प्राणों की परवाह किये बिना, लोगों को ठीक ज्ञान का संदेश देने के लिये निकल पड़े। इसे कहते हैं अपने परिवार का दायरा बड़ा करना।

यही नही हम समय–समय पर देखतें हैं, बहुत से ऐसे व्यक्ति हैं जो अपनी कमाई का बहुत बड़ा हिस्सा दूसरो के सुख के लिये सड़के, धर्मशालायें, विद्यालय, हस्पताल, पानी के स्रोत बनाने के लिये दे देते हैं।

अपने पड़ोसी के प्रति प्यार की भावना, विश्व बन्धुत्व की भावना, **मनुष्य** के प्रति मैत्री प्यार की व त्याग की भावना वैदिक मूल्यों का मुख्य अंग है। मानविय सम्बन्धो का दायरा सिर्फ अपना घर ही नहीं किन्तु सारा समाज है।

जीवन तभी है जो सब के साथ मिल कर जिया जाये और दूसरों के काम भी आये। प्यार वह है जो हमारे स्वार्थ व दूसरे अमानवीय गुणों को दूर कर दे व हमारे हृदय प्टल को उन सभी के लिये करूणा व संवेदना से भर दे, जो हमारे जितने भाग्यशाली नहीं।

वेद कहते हैं स्वस्ति पन्था मनु चरेम सुर्याचन्द्रमसाविव–– हम सूर्य और चन्द्रमा की तरह सदैव कल्याणकारी मार्ग पर चलते रहें।

विदुर नीति में कहा है,

परिवार के लिये, निजी स्वार्थ व हित को त्याग दें,
समाज के लिये, पारिवारिक स्वार्थ व हित को त्याग दें,
व देश के लिये, समाज के हित को त्याग दें,

Our greatest glory is not in never falling, but in rising every time we fall

पाखण्डी नहीं, क्रांतिकारी कवि, सत्यान्वेशी चिंतक व सच्चे साधक थे कबीर

सीता राम गुप्ता,

शिक्षा के प्रसार–प्रसार के बावजूद आज पूरे विश्व को अंधविश्वास ने बुरी तरह से जकड़ा हुआ है। तथाकथित शिक्षित समाज भी इसके चंगुल से मुक्त नहीं। इसका विरोध भी कम नहीं होता। कुछ लोगों के लिए कर्मकाण्ड और अंधविश्वास बहुत अच्छा व्यवसाय है अतः वे किसी भी क़ीमत पर समाज को इससे मुक्त नहीं होने देना चाहते। जो लोग समाज से अंधविश्वास की समाप्ति करके समाज को नई दिशा देना चाहते हैं उनको अपनी जान तक से हाथ धोना पड़ा है। कबीर ने मध्य काल में अंधविश्वास और पाखण्ड का जितना विरोध किया वह अद्वितीय है। कबीर न केवल एक महान संत, कवि व चिंतक थे अपितु एक प्रखर क्रांतिकारी समाज सुधारक व आडंबर के घोर विरोधी भी थे।

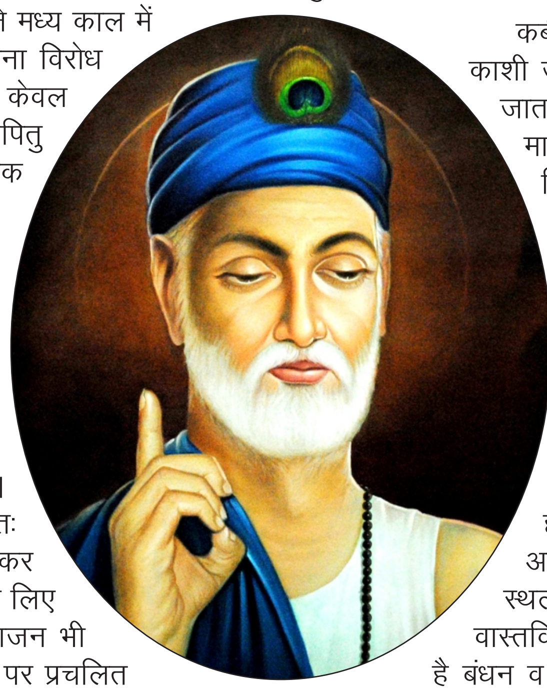

सबसे बड़ी व महत्त्वपूर्ण बात ये कि कबीर साधक होते हुए भी एक गृहस्थ थे और अपने कपड़ा बुनने के साधारण से काम में मस्त रहते थे। वे सच्चे संन्यासी थे। कबीर न हिंदू थे न मुसलमान अपितु एक सच्चे व निडर इंसान थे। क्योंकि कबीर सत्यान्वेशी थे अतः अनुभूत सत्य को बेबाक व निडर होकर समाज के सामने रख देते थे। इसके लिए उन्हें सत्ता व मठाधीशों का कोपभाजन भी बनना पड़ा। धर्म–अध्यात्म के नाम पर प्रचलित आडंबर का कबीर ने घोर विरोध किया। हिन्दुओं व मुसलमानों दोनों को उनके पाखण्ड के लिए फटकारा। उस समय के अनुसार यह एक अत्यंत क्रांतिकारी क़दम था जो आज भी संभव नहीं लगता। बोलकर तो देखिए किसी धर्म अथवा मठाधीश की ज़्यादतियों के विरुद्ध।

ये कबीर ही थे जिन्होंने धर्म–अध्यात्म के नाम पर हो रहे पाखण्डों का खंडन किया। यह उनके क्रांतिकारी व सत्यान्वेशी ही नहीं ज्ञानी होने का भी प्रमाण है। कबीर निरक्षर थे अशिक्षित नहीं। उन्होंने सत्संग व यात्राओं से सारा ज्ञान प्राप्त किया। अंधविश्वास के भी विरोधी थे कबीर। उन्होंने विज्ञान की शिक्षा नहीं पाई लेकिन उनका दृश्टिकोण वैज्ञानिक था। किसी बात को जाँच–परखकर ही मानते थे। ज्ञान या कह लीजिए सत्य की खोज में भटकते रहे। घर–बार त्याग कर संन्यासी हो गए लेकिन जल्दी ही मोह भंग हो गया इस मार्ग के छल–कपट, दंभ व पाखण्ड से। साधुओं के वेश में अधिकांश लोग व्यसनों में लिप्त व कर्म मार्ग से भागे हुए ही थे। भिक्षावृत्ति रुचि नहीं कबीर को। यह कबीर का वैज्ञानिक दृश्टिकोण व सकारात्मक सोच ही थी कि कबीर लौट आए। घर संभाला। भिक्षावृत्ति की बजाय अपने पारंपरिक पेशे से जुड़ गए।

कबीर काशी में रहते थे। पवित्र नगरी काशी जहाँ मरण भी मोक्ष की गारंटी माना जाता है। कबीर इन बेहूदा बातों को नहीं मानते थे। शास्त्रों की अनर्गल बातों पर विश्वास नहीं करते थे। हर मिथक को तोड़ देना चाहते थे कबीर। अपने अंतिम समय में मगहर जा बसे। मगहर में ही उनकी समाधि है। वही मगहर जहाँ मरने वाले को कहते हैं मोक्ष नहीं मिलता। यह कोरा अंधविश्वास है। कबीर ने इस मिथ्या धारणा को चूर–चूर कर डाला। कबीर ने कहा कि ईश्वर तो हर जगह व हर प्राणी में मौजूद है अतः उसे मंदिर–मस्जिद व अन्य पूजा स्थलों में खोजना व्यर्थ है। आत्मज्ञान ही वास्तविक ज्ञान है। जहाँ तक मोक्ष का प्रश्न है बंधन व मुक्ति तो मन की होती है। विकृत विचार बाँधते हैं तो सकारात्मक विचार मुक्त करते हैं।

कबीर जाति–पाँति के घोर विरोधी थे। मूर्तिपूजा को आडंबर मानते थे। लोगों ने कबीर की ही मूर्तियाँ बना कर पूजना शुरू कर दिया। पूजा–पाठ में पैसा जो बरसता है। कबीर कर्मकाण्ड के हर तरह से विरोधी। इस संसार को निश्पक्ष होकर देखा और जैसा अनुभव किया सबके सामने रख दिया। संसार को साक्षी भाव से देखा, उसका मन पर असर नहीं लिया। मन की निर्मलता के लिए ये ज़रूरी है। धर्म

के नाम पर लाखों–करोड़ों बनाने वाले कबीर को हेय दृष्टि से देखते हैं। उनकी आलोचना करते हैं। कर्मकाण्ड करने वाले, कथावाचक व तथाकथित गुरू कबीर का तो विरोध करते हैं लेकिन उनके दोहों से लाखों–करोड़ों का व्यापार कर रहे हैं। हर तीसरा कथावाचक भोलीभाली जनता को गुमराह कर दीक्षा दे रहा है, शक्तिपात कर रहा है। यदि ''गुरू गोविंद दोऊ खड़े काके लागूँ पाँय, बलिहारी गुरू आपने जिन गोविंद दिया मिलाय'' को मानते हो तो ''मोको कहाँ ढूंढे रे बंदे मैं तो तेरे पास में। ना मैं मंदिर ना मैं मस्जिद, ना काबे कैलाश में'' को भी मानिए। लेकिन नहीं।

हम कहते हैं कि कबीर ने गुरू के महत्त्व को सबसे ज़्यादा रेखांकित किया है। लेकिन उनका तो कोई गुरू नहीं था। लोग कहते हैं कि कबीर के गुरू थे रामानंद। लेकिन क्या गुरू रामानंद ने कबीर को विधिवत दीक्षा दी थी? कबीर ने रामानंद को गुरू मान लिया था, बना लिया था या चुन लिया था लेकिन क्या स्वामी रामानंद ने भी उन्हें शिष्य बनाया या माना था? क्या स्वामी रामानंद भी कबीर के शिष्यत्व पर रीझे थे? क्या कबीर–सा शिष्य पाकर उन्हें संतुष्टि हुई थी? शायद नहीं। एक तरफा मामला था। कबीर समझते थे, एक मजबूरी थी। कबीर अपना प्रकाश स्वयं बन गए थे और औरों को भी प्रकाशित करना चाहते थे।

कबीर समाज की विसंगतियों पर प्रहार कर उन्हें ध्वस्त करना चाहते थे और ये तभी संभव था जब वो किसी गुरू परंपरा से जुड़ते। परंपरानुसार गुरू बनाना उनकी विवशता थी अन्यथा कोई उनकी बात नहीं सुनता। कबीर ने स्वामी रामानंद को गुरू के रूप में मान लिया लेकिन मन में अधूरापन ही रहा। उसी अधूरेपन की प्रतिध्वनि बार–बार उनकी वाणी में मुखरित हुई है गुरू की महिमा के रूप में। कबीर का जीवन लंबा हुआ है जिसमें कई पड़ाव आए। घर–बार छोड़कर संन्यासी हो गए लेकिन फिर लौट आए। भीख माँगकर उदरपूर्ति करने की अपेक्षा मेहनत की कमाई से परिवार का भरण–पोषण करने लगे। यहाँ अनुभव उनका गुरू बना। अंत में घोषण की :

मोको कहाँ ढूँढ़े बंदे, मैं तो तेरे पास में।
ना मैं देवल ना मैं मसजिद, ना काबे कैलास में।
ना तो कौने क्रिया–कर्म में, नाहि जोग बैराग में।
खोजी होय तो तुरतै मिलिहौं, पल भर की तालास में
कहै कबीर सुनो भई साधो, सब स्वाँसों की स्वाँस में

यहाँ गुरू नदारद है। अप्प दीपो भव की स्थिति है। आप पल भर में परम तत्त्व को जान सकते हैं ज़रूरत है आत्मविश्लेषण की, स्वयं की खोज करने की। कबीर की कुछ साखियाँ देखिए :

ज्यों तिल माहिं तेल है ज्यों चकमक में आग,
तेरा साईं तुझ में बसे जाग सके तो जाग।

कस्तूरी कुंडल बसै मृग ढूँढ़े बन माहिं,
ऐसे घट–घट राम हैं दुनिया देखे नाहिं।

लेकिन विडंबना तो देखिए कि कबीर के बारे में एक ऐसी भ्रांति भी आज तक जन–मानस में प्रचलित है जिसका किसी ने खण्डन नहीं किया। पोंगापंथी तो खैर क्या खण्डन करते विद्वानों ने भी नहीं किया। सब जानते हैं कि हिन्दू और मुसलमान दोनों उनके शिष्य थे। हिन्दू उन्हें हिन्दू तथा मुसलमान उन्हें मुसलमान मानते थे। उनकी मृत्यु पर हिन्दुओं ने कहा कि वे कबीर का दाह संस्कार करेंगे और मुसलमानों ने कहा कि वे उन्हें दफ़नाएँगे। जब उनकी मृत देह से चादर हटाई गई तो उनके शव की जगह पर फूलों की एक ढेरी मिली। हिन्दुओं और मुसलमानों ने उन फूलों को आधा–आधा बाँट लिया। हिन्दुओं ने अपने आधे फूलों का दाह संस्कार कर दिया और मुसलमानों ने वे फूल दफ़ना दिए। ये बात अपनी जगह दुरुस्त है कि कबीर साहब हर बुराई के विरोधी तथा हिन्दु–मुस्लिम एकता के पक्षधर थे लेकिन संसार का इससे बड़ा झूठ क्या होगा कि उनके शव कि जगह फूल मिले।

किसी भी दृश्टि से ये बात उचित प्रतीत नहीं होती वो भी एक सत्यान्वेशी के लिए। ऐसे चमत्कार सुने तो जाते हैं देखे नहीं जाते। यह संभव ही नहीं है फिर क्यों ऐसी अनर्गल बातों को साहित्य के ज़रिए प्रचारित–प्रसारित किया जाता है? इन बेतुकी बातों का खण्डन क्यों नहीं किया जाता? जहाँ पर मृतक का दाह–संस्कार करने की प्रथा है वहाँ दाह–संस्कार के बाद अगले किसी दिन फूल चुनने की रस्म होती है। फूल चुनना वास्तव में उन अस्थियों के चुनने को कहते हैं जो जलने से बच जाती हैं। उन्हें किसी पवित्र नदी या सरोवर में प्रवाहित या विसर्जित कर दिया जाता है इस आशय के साथ कि इससे मृतक को मोक्ष की प्राप्ति होगी। हो सकता है कि उनके अस्थि–अवशेषों को जिन्हें फूल कहा जाता है हिन्दुओं और मुसलमानों ने आधा–आधा बाँट लिया हो और हिन्दुओं ने अपने आधे फूलों अथवा दग्धावशेशों को किसी नदी में प्रवाहित कर दिया हो तथा मुसलमानों ने आधे फूलों अथवा दग्धावशेशों को दफ़ना दिया हो।

जो भी हो कोई शव कभी फूलों में परिवर्तित नहीं हो सकता। इस प्रकार की अनर्गल बातों से आप समझते हैं कि कबीर का रुतबा बढ़ेगा? कभी नहीं। कबीर तो वास्तव में वीतरागी हो चुके थे। वो राग–द्वेश, लाभ–हानि, सुख–दुख व जीवन–मरण से ही नहीं मोक्ष अथवा बंधन से भी निरपेक्ष हो चुके थे। कबीर पुनर्जन्म के लिए नहीं, वर्तमान जन्म में सुधार के लिए चिंतित व प्रयासरत थे। उनकी मृत्यु से जुड़े चमत्कारी प्रसंग उनकी जीवन भर की साधना को निरर्थक व उनकी महानता को कम कर देते हैं। एक सत्यान्वेशी का मूल्यांकन करते समय सत्य की उपेक्षा कैसे की जा सकती है? **फोन नं 09555622323ए**
Email : srgupta54@yahoo.co.in

संबंधों को अधिकाधिक प्रगाढ़ और सुदृढ़ बनाने के लिए किसी की भूल को तूल न देना ही श्रेयस्कर है

प्रेम नारायण गुप्ता,

दो मित्र समुद्र के किनारे आराम से टहलते हुए बातें करते हुए जा रहे थे। इसी दौरान किसी बात को लेकर उनमें बहस होने लगी। उत्तेजित होकर एक मित्र ने दूसरे मित्र के मुँह पर थप्पड़ जड़ दिया। मार खाने वाला मित्र कुछ नहीं बोला। उसने चुपचाप अपनी उँगली से समुद्र की रेत पर लिख दिया, ''आज मेरे मित्र ने मेरे मुँह पर थप्पड़ मार दिया।'' दोनों अच्छे मित्र थे। ये बात वहीं ख़त्म हो गई। कुछ दिनों बाद दोनों मित्र एक जंगल में घूमने गए। वहाँ स्वच्छ जल से लबालब भरी एक सुंदर झील थी। दोनों मित्र अच्छे तैराक नहीं थे फिर भी झील में नहाने का लोभ सँवरण नहीं कर पाए। झील काफी गहरी थी। दोनों मित्र झील के किनारे पर कम गहरे पानी में ही रुक कर नहाने लगे। जिस मित्र ने समुद्र के किनारे थप्पड़ खाया था वह नहाते–नहाते कब काफी अंदर तक चला गया पता ही नहीं चला और गहरे पानी में अचानक डूबने लगा। दूसरा मित्र जो स्वयं अच्छा तैराक नहीं था अपनी जान की परवाह न करते हुए वहाँ पहुँचा जहाँ उसका मित्र डूब रहा था और उसे सुरक्षित बाहर निकाल लाया। मित्र जब थोड़ा प्रकृतिस्थ हुआ तो सबसे पहले उसने अपनी जान बचाने वाले मित्र का धन्यवाद किया और फिर लोहे की एक कील खोज लाया। उसने लोहे की कील से एक बड़े से सपाट पत्थर पर मोटे–मोटे अक्षरों में लिखा, ''आज मेरे मित्र ने मेरी जान बचाई।''

बचाने वाले मित्र ने झिझकते हुए पूछा, ''मित्र उस दिन जब मैंने तुम्हें थप्पड़ मारा तो तुमने समुद्र की रेत पर लिखा कि आज मेरे मित्र ने मेरे मुँह पर थप्पड़ मार दिया और आज जब मैंने तुम्हें डूबने से बचाया तो तुमने लोहे की कील से पत्थर पर खुरच कर मोटे–मोटे अक्षरों में लिखा कि आज मेरे मित्र ने मेरी जान बचाई। ये अंतर क्यों?'' मित्र ने जवाब दिया कि जब कोई हमें पीड़ा पहुँचाता है तो उसे याद रखने की क़तई ज़रूरत नहीं होती। अच्छा ही है कि वो लिखा शीघ्र मिट जाए। समुद्र के रेत पर लिखी इबारत की तरह क्षमा रूपी समुद्री लहरें उसे हमारे मन से मिटाने में हमारी मदद करें। रेत पर लिखने का यही अर्थ है कि वह घटना यथाशीघ्र विस्मृत हो जाए अन्यथा मित्रता व अन्य संबंधों में दरार बढ़ जाने की संभावना बढ़ जाती है। जहाँ तक पत्थर पर लिखने की बात है उसका तात्पर्य है उस बात को याद रखना। अच्छी बातें कभी भी विस्मृत नहीं होनी चाहिएँ। पत्थर की लकीर की तरह उन्हें कभी भी मिटने नहीं देना चाहिए। मित्रों के सहयोग को याद रखने और उसको महत्त्व देने से मैत्री और अधिक प्रगाढ़ और सुदृढ़ होती है।

हाँ, संबंधों को सामान्य बनाए रखने के लिए, उन्हें टूटने से बचाने के लिए मित्रों के साथ–साथ परिवार के सदस्यों, सहकर्मियों, परिचितों व संपर्क में आने वाले अन्य सभी लोगों की छोटी–मोटी ग़लतियों को नज़रअंदाज़ करना, उन्हें भूल जाना व उन्हें क्षमा करना हमारे अपने ही हित में ही होता है। उन्हें न भूलने पर टकराव की स्थिति बनी रहती है जो संबंधों के सामान्यीकरण में सबसे बड़ी बाधक होती है। संबंधों का जीवन में महत्त्वपूर्ण स्थान होता है। किसी से भी अच्छे संबंध बड़ी मुश्किल से बन पाते हैं। उनका पोशण करने में उम्रें बीत जाती हैं। उन्हें एक ही झटके में तोड़ देना किसी भी तरह से बुद्धिमानी नहीं। किसी की भूल को तूल न देकर उसे नज़रअंदाज़ करके क्षमा कर देने से संबंध स्वतः और अच्छे हो जाते हैं। जहाँ तक किसी द्वारा की गई भलाई अथवा क्षमा की बात है भलाई अथवा क्षमा करने वाले के प्रति कृतज्ञता व आभार प्रकट करना, उसे हमेशा याद रखना न केवल शिष्टाचार वश अनिवार्य है अपितु हमारे हित में भी है क्योंकि इससे संबंधों में जो प्रगाढ़ता आती है, परस्पर प्रेम व विश्वास बढ़ता है वह हमारे जीवन को सँवार कर उसे अपार आनंद से भरने में सक्षम होता है।

How dharma takes you to 'moksha'

Bhartendu Sood

In Vedas there is one sukti—***Hey ishvar dayanidhe ! Bhavat-kripayanene japopasnadh ikarmana dharmarthkamokshanam sadhah siddhir bhavennah*** Oh merciful God, endow me with the tenets of dharma so that the *(artha)* wealth I earn, is by noble means. May I use this wealth for the performance of my duties to self, family and society and for the gratification of my legitimate desires so that I attain *Moksha* (eternal bliss). According to Vedas, when one gets his wealth by following tenets of dharma and use such wealth for noble pursuits then Moksha comes to him naturally in this workaday world. He has neither to move to far-flung places like mountains nor he needs to renounce this world.

This is best explained by this illustration – suppose you want to cut a big sheet of cloth in to four pieces. All that you need to do is to cut from three places; the fourth piece will get generated automatically. You have not to make the fourth cut. In the same fashion, when we engage our life in these three pursuits,— learning & embracing tenets of dharma, earning wealth by following dharma, using such wealth to perform good deeds then *Moksha* follows automatically.

The first question comes—who can teach us the tenets of dharma? The first nursery is home and second nursery is *Satsang.* That child is very fortunate who has the benefit of parents with spiritual bent. The child learns most from the conduct of their parents. If they observe tenets of dharma in their life, then there is every possibility that child will be *dharmik,* the one endowed with moral values like fortitude, karuna, forgiveness, control over mind and desires, honesty & integrity, purity of mind and body, wisdom, knowledge, truthfulness and absence of anger.

'Artha' is the wealth which according to Vedas is earned by noble means and by the sweat of one's brow. On the other hand wealth earned by illegitimate means is *'Anarth'* and that invariably drives the man to lustful desires and results in devastation only. Vedas implore man to use *'Artha'* to perform his assigned duties towards him, his family and society and for realizing his legitimate desires *(karma)*. Any wealth which is over and above his needs should be used for benevolent deeds without indulging in non-covetousness, non-sensuality, and non-possessiveness and by observing purity, contentment, austerity, study, and complete surrender to God.

When a man lives like this, *Moksha,* the eternal bliss comes automatically to him in this workaday world.

9217970381

अश्वगन्धा

इसे असगन्ध भी कहते हैं। इसकी कच्ची जड़ से अश्व (घोड़ा) जैसी गन्ध आती है तथा इसका सेवन करते रहने से अश्व जैसा उत्साह उत्पन्न होता है, इसीलिए इसे अश्वगन्धा कहा जाता है। सूख जाने पर यह गन्ध कम हो जाती है। पहले यह नागोर (राजस्थान) में बहुत होती थी और वहीं से सर्वत्र भेजी जाती थी, इसलिए इसे नागौरी असगन्ध भी कहते हैं। यह भारत में प्रायः सब जगह मिलती है। इसका पौधा एक से पांच फुट तक ऊँचा होता है। यह स्वाद में मीठी, कसैली, कड़वी, पचने पर मधुर, हल्की, चिकनी तथा गर्म है। इसका मुख्य प्रभाव सर्वशरीर पर रसायन के रूप में पड़ता है। आचार्य चरक ने असगन्ध को सभी प्रकार के जीर्ण (पुराने) रोगों, कमजोरी और शोथ (सूजन) आदि के लिए उपयुक्त माना है। सुश्रुत के अनुसार यह औषधि किसी भी प्रकार की दुर्बलता, कृषता (दुबलापन) में गुणकारी है। पुष्टि बलवर्धन हेतु इससे श्रेष्ठ औषधि आयुर्वेद के विद्वान कोई और नहीं मानते। अश्वगन्धा प्राधनतः एक टानिक है। यह शरीर के बिगड़े क्रिया–क्लापों को सुव्यवस्थित करती है। थकान का निवार्ण कर शक्ति प्रदान करती है। यह अंग अवयवों की, जीवकोषों की आयु बढ़ाती हैं। इस कारण असमय बुढ़ापा नहीं आने देती।

स्वामी दयानन्द के जीवन से जुड़ी इस घटना में बहुत बड़ी शिक्षा है

फरवरी, 1825 को गुजरात प्रान्त के टंकारा नामक स्थान में **करसनजी** तिवारी के यहां मूलशंकर नाम के बालक का जन्म होता है जिसे संसार महर्षि दयानन्द सरस्वती के नाम से जानता है। आपके पिता कट्टर पौराणिक व शिवभक्त थे। उन्होंने पुराणों की कथा सुन रखी थी व स्वयं भी इससे जुड़े सभी कर्मकाण्ड किया करते रहते थे। मूलशंकर के पिता की प्रेरणा से 14 वर्ष की आयु में शिवरात्रि के दिन व्रत रखा और उसके सभी नियमों व परम्पराओं का मन वचन–व कर्म से पूरा पालन किया। मध्य रात्रि अपने ग्राम के निकट वर्ती शिवालय में पिता व अन्य भक्तों के साथ जागरण करने का निश्चय किया। बालक का निश्चय दूसरों से अलग था। जब कि उसके पिता समेत वाकी भक्त तो जहां जगह मिली सो गये थे, मूलशंकर जागता रहा और उसने अपना ध्यान उस शिवलिंग पर लगाये रखा।

मूलशंकर क्या देखता है कि अर्ध रात्री के समय कुछ चूहे बिलों से बाहर निकल कर शिवमूर्ति और शिवलिंग पर स्वेच्छा व स्वतन्त्रतापूर्वक उछल–कूद करते हुए वहां भक्तों द्वारा सजये व रखे गये प्रसाद को खा रहें हैं। उसके बाल मन में विचार आया कि शिव भगवान तो सर्वशक्तिमान है इन चूहों को भगा क्यों नहीं रहे। निश्चय ही यह पत्थर की मूर्ती ईश्वर नहीं हो सकती इस बात ने उनके मन में क्रान्ति कर दी। पिता को जगा कर उन्होंने इस विषय में प्रश्न किये। पर पिता सन्तो**षजनक जवाब न दे सके। मूल शंकर** व्रत वपूजा का त्याग कर घर आ गये और भोजन कर सो गये। इस घटना ने उस बालक को सच्चे शिव व ईश्वर की खोज करने की प्रेरणा दी। वही बालक मूल शंकर आगे चलकर महान वेदों का पण्डित और समाज सुधारक महर्षि **दयानन्द सरस्वती बना।**

क्या शिक्षायें हैं इस घटना में?

हमारी बुद्धिमता इसी में है कि हर बात को तर्क से तोलें। चाहे वह किसी भी महान ग्रथं में लिखी है या किसी बहुत महान व्यक्ति ने कही है, चाहे वह आपका गुरू ही क्यों न हों। या पीढ़ी दर पीढ़ी हो रही है। महर्षि दयानन्द ने स्वयं कहा है कि मैं सर्वज्ञ नहीं हूं। इसी तरह गौतम बुद्ध ने कहा था कि मैं जो भी कहता हूं उसे भी अच्छी तरह जांचे पड़तालें, अगर ठीक लगती है तो धारण करें। अगर ठीक नहीं लगती तो उसको धारण न करें। शंका होना बहुत अच्छी बात है। पर यह भी उतना ही आवश्यक है कि हम शंका का समाधान करें । स्वाध्याय द्वारा अपनी सोच द्वारा और अगर तब भी नहीं सुलझती तो किसी विद्वान की सहायता लें। ऐसा विद्वान जो लोभी न हो और स्वार्थी न हो।

सैंकड़ो हजारों साल पहले लिखी पुस्तकें मिलावट के बिना नहीं हो सकती। कारण मनु**ष्य सदा से ही महत्वाकांक्षी, लोकेशणा वाला और लोभी रहा है, खास कर जिनको हम धर्म गुरू मानकर चलते हैं। वे अपने नाम के लिये, नये मत शुरू करने के लिये ग्रथों में मिलावट करते रहें है।**

उदाहरण के लिये मध्यकालीन आचार्यों ने यजुर्वेद का भाष्य करते हुये गोमेध, अश्वमेंध, नरमेध को अग्निहोत्र में गाय, घोड़ा नर की बली बताया है और उसका बहुत भयानक चित्रण किया है। दुख की बात यह है कि पूर्व भारत में, पहाड़ी स्थानो और नेपाल में आज भी अग्निहोत्र इसी तरह होते है।

ऐसे में हर बात को तर्क और शंका के हथियार का प्रयोग कर देखना सब से बुद्धिमता की बात है।

रजि. नं. : 4262/12 ।। ओ३म् ।। फोन : 94170-44481, 95010-84671

महर्षि दयानन्द बाल आश्रम

मुख्य कार्यालय -1781, फेज़ 3बी-2, सैक्टर-60, मोहाली, चंडीगढ़ - 160059
शाखा कार्यालय - 681, सैक्टर-4, नज़दीक गुरुद्वारा, मुंडीखरड़-मोहाली
आर्य समाज मंदिर, चंडीगढ़ व पंचकुला
E-mail : dayanandashram@yahoo.com, Website : www.dayanandbalashram.org

स्टेट बैंक ऑफ इंडिया की महिला क्लब के सदस्य बाल आश्रम के बच्चों के साथ

धार्मिक माता/पिता 2100 प्रति माह
धार्मिक सखा 500 प्रति माह
धार्मिक बहन/भाई 1500 प्रति माह
धार्मिक सहयोगी 100 प्रति माह
धार्मिक बन्धु 1000 प्रति माह
धार्मिक साथी 50 प्रति माह
आप आर्थिक सहयोग देकर भी पुण्य के भागी बन सकते है् :-

A/c No. : 32434144307
Bank : SBI
IFSC Code : SBIN0001828

नरेन्द्र गुप्ता लेखराम (+91 7589219746)

स्वर्गीय
श्रीमती शारदा देवी
सूद

स्वर्गीय
डॉ0 भूपेन्दर नाथ गुप्त
सूद

निमार्ण के 63 वर्ष

गैस ऐसीडिटी
शिमला का मशहूर
कामधेनु जल

(एक अनोखी आर्युवैदिक दवाई
मुख्य स्थान जहां उपलब्ध है)

Chandigarh-2691964, 5076448, 2615360, 2700987, 2708497, Manimajra-2739682, Panchkula 2580109, 2579090, 2571016, Mohali-2273123, 2212409, 2232276, Zirakpur-295108, Shimla- 2655644, Delhi-23344469, 27325636, 47041705, 27381489,Yamunanagar-232063, Dehradoon-2712022, Bhopal-2550773, 9425302317, Jaipur-2318554, Raipur-9425507000, Lucknow-2683019, Ranchi-09431941764, Guwhati-09864785009, 2634006, Meerut- 8923638010, Bikaner-2521148, Batala-240903, Gwaliyar-2332483, Surat-2490151, Jammu-2542205m, Gajiabad-2834062, Noida-2527981, Nagpur-9422108322, Ludhiana-2741889, 9915312526, Amritsar-2558543, Jallandhar-2227877, Ambala Cantt-4002178, Panipat-4006838, Agra-0941239552, Patiala-2360925, Bhatinda-2255790

Medicine is available in other places also, Please contact us to know the name of the shop/dealer.

शारदा फारमासियुटिकलज मकान 231ए सैक्टर 45–ए चण्डीगढ़ 160047

0172-2662870, 92179 70381, E-mail : bhartsood@yahoo.co.in

जिन महानुभावो ने बाल आश्रम के लिए दान दिया

Vidyawati

Late Rajinder Kuar Verma

Ramma

Late Sh. Gian Muni

Gautam Chakraborti

Dr. Sanjay Gupta

Astha Puri

RNI NO. CHABIL/2012/47744 POSTAL REGN. NO. G/CHD/0154/2013-2015

मजबूती में बे–मिसाल

घर का निर्माण डीप्लास्ट के साथ

40 years in service

DIPLAST
PLASTICS LIMITED
AN ISO 9001 COMPANY

C-36, Industrial Phase 2, S.A.S. Nagar, Mohali (Pb.) India
Phone : +91-172-2272942, 5098187, Fax : +91-172-2225224
E-mail : diplastplastic@yahoo.com, Web : www.diplast.com

QUALITY IS OUR STRENGTH

विज्ञापन / Advertisement

यह पत्रिका शिक्षित वर्ग के पास जाती है आप उपयुक्त वर–वधु की तलाश, प्रियजनों को श्रद्धा सुमन, अपने व्यापार को आगे ले जाने के लिये शुभ–अशुभ सूचना विज्ञापन द्वारा दे सकते है।

Half Page Rs. 250/- Full Page Rs. 500/- 75 words Rs. 100

Contact : Bhartendu Sood 231, Sector 45-A, Chandigarh
9217970381 and 0172-2662870